इस्लाम और कर्बला

उमदतुल उलमा आयतुल्लाह सै० कल्बे हुसैन साहब क़िब्ला

"इस्लाम ज़िन्दा होता है कर कर्बला के बाद"

इसमें शक नहीं कि मिस्टर मुहम्मद अली जौहर हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर मौजूदा सियासत का एक रौशन सितारा बन के ज़ाहिरी इस्लाम के उफ़ुक़ पर चमके और बहुत नाम और मरतबा के बाद इस्लामियात को बहुत दुनियावी फ़ायदा पहुँचाकर नावक़्त गुरूब कर गये। दुनियावी हैसियत से मौसूफ़ ने बड़े-बड़े काम अन्जाम दिये जो मौजूदा सियासत की तारीख़ में हमेशा यादगार रहेंगे। मगर यह लाज़िम तो नहीं है कि जो दुनियावी मामलों में बुलन्द निगाह हो वह मज़हब का भी वैसा ही आलिम हो। इसी बिना पर मैं पूरी क़ुव्वत के साथ कह सकता हूँ कि मिस्टर मुहम्मद अली ने इस मिस्रे में बड़ी से बड़ी ग़लती की है। बल्कि कर्बला के बेमिसाल वाक़िआत बल्कि हक़ीक़ते इस्लाम ही से अज्ञानता का मुकम्मल सुबूत दिया है। ये जानबूझकर हो या नासमझी से शहादत हुसैनी की तौहीन की है। इसमें शक नहीं कि क़ुरआन पाक की आयते करीमा "इन्नद्दीना इन्दल्लाहिल इस्लाम" ख़ुदा के नज़दीक तो बस एक ही दीन है यानी इस्लाम। इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ अव्वल नक़्शे इन्सानियत और सरीर आराए मस्नदे ख़िलाफ़त व नुबुव्वत जनाब आदम थे सबसे पहले आँहज़रत[अ०] ने इस ज़मीन पर इस्लाम का बीज बोया और आपके बाद एक लाख चौबीस हज़ार नबियों और रसूलों ने और उनके वसियों ने आबयारी करके इस्लाम के दरख़्त को फैलाया बढ़ाया और फल फूल दार किया। यक़ीनन इसी दीन के आख़िरी नबी व रसूल सैय्यिदुल अम्बिया ख़ातमुन्नबिय्यीन मख़लूक़ात में सबसे अफ़ज़ल जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] थे। जिनके पहले वसी और ख़लीफ़ा हज़रत अली[अ०], दूसरे इमाम हसन[अ०] तीसरे वह हुसैन[अ०] इब्ने अली[अ०]। जिनकी तरफ़ कर्बला मन्सूब है और इसके बाद इमाम हुसैन[अ०] की औलाद से तो मासूम और इमाम हुए इन सबने इस्लाम ही को फैलाया, बढ़ाया और इस्लाम के तालीमात पर दुनिया के इन्सानों को चलाया। मेरा अक़ीदा है कि सब के सब इस्लाम के मुबल्लिग़ थे, मुहाफ़िज थे, जो अन्दाज़ जिस नबी और वसी के ज़माने के हिसाब से था मुनासिब था इस अन्दाज़ से तबलीग़ और इस्लाम की हिफ़ाज़त में कोई कमी नहीं की और दौरे मासूमीन और आख़री मासूम[अ०] की ग़ैबत के बाद बहुत से उलमा भी ऐसे गुज़रे जो रसूल[स०] की हदीस "उलमाओ उम्मती कअम्बियाइ बनी इस्राईल" का सही मिस्दाक़ होते हुए इस्लाम की हिफ़ाज़त और उसके मिटते हुए नक़्श और निगार रौशन कर गये, और मुमकिन है कि आइन्दा भी और ऐसे उलमा पैदा हों, लेकिन मिस्टर मुहम्मद अली का यह कहना कि "इस्लाम ज़िन्दा होता है हर कर्बला के बाद" बिल्कुल ग़लत और या तो जानबूझकर कर्बला के वाक़िआत से आँख चुराने का सुबूत है। दुनिया याद रखे कि जिस तरह इस चौड़े आसमान के नीचे और पूरी दुनिया के ऊपर बल्कि तमाम आलम बल्कि दुनियाए हस्तो बूद में जिस तरह कोई ज़मीन फ़ुरात के कनारे पैदा की जाने वाली ज़मीन नेनवा के अलावा कर्बला न बनी और न है। न क़यामत तक होगी, इसी तरह शहीदे नैनवा से पहले या बाद उस वक़्त तक हशर और नश्र तक कोई हुसैन[अ०] पैदा हुआ था, न है, और न होगा। इसी तरह इमाम हुसैन[अ०] की शहादत जिस तरीक़े और अन्दाज़ से सामने आई वह न पहले हज़रते आदम[अ०] से लेकर अब तक और न अब से क़यामत तक हो सकती है, न होगी।

एक लाख चौबीस हज़ार नबी और उनके वसी इस

दुनिया में आए कुछ ने मुसीबत से और ज़्यादातर ने बहुत ही तकलीफ़ें और मुसीबतें उठाकर इन्तिक़ाल किया या शहादत पाई। आज उनमें से अक्सर लोगों के वाक़िआत और सवानेह हयात हमारे सामने हैं। मगर जब हम इन हालात को अपने सरदार व आक़ा इमाम हुसैन[अ°] की ज़िन्दगी के वाक़िआत व शहादत के वाक़िए से ज़्यादा साबित नहीं होते। हक़ छुपाने वाले, हक़ीक़त को न जानने वाली दुनिया समझ ले और ख़ूब अच्छी तरह समझ ले कि जब किसी नबी[अ°] रसूल[स°], इमाम[अ°] की शहादत अपने उनका रंग नक़्शो निगार और बेनज़ीर अन्दाज़े सदाक़त में डूबे हुए वाक़िआत कर्बला के सामने आने से मुँह छिपाती है तो कोई ग़ैर मासूम क्या हक़ीक़त रखता है कि वह कर्बला के जैसे नक़्श और निगार शहादत पेश करने की हिम्मत करे या नाम भी ले सके। जनाब आदम[अ°] की औलाद में हाबील[अ°] शहीद जनाब ज़करिया[अ°] जनाब जरजीस[अ°] और आख़िर में जनाब यहया[अ°] और फिर ईसाईयों के अक़ीदे के मुताबिक़ जनाब ईसा[अ°] वग़ैरा-वग़ैरा शहीद हुए मगर कर्बला की शहीदे आज़म के मुक़ाबले में इन हज़रात की शहादत का पल्ला सुबुक होकर इतना ही बुलन्द हो जाता है। जितना हज़रत ईसा के ठहरने की जगह बल्कि मेरा तो अक़ीदा है कि हमारे अइम्माए मासूमीन से हर मासूम या ज़हर से शहीद हुआ या तलवार से और ख़ुदा की क़सम मैं उनमें से हर एक की शहादत को तमाम नबियों से बुलन्द जानता हूँ और मेरा यह भी अक़ीदा है कि अली[अ°] और उनकी तमाम औलाद मासूम में से क़ुदरत जिस एक से भी वाक़िआत कर्बला की ख़िदमत लेना चाहती वह ठीक उसी तरह इस शहादत के रास्ते से सब्र व इस्तेक़लाल के साथ गुज़र जाता, जिस तरह हमारे सैय्यिद व आक़ा हुसैन[अ°] इब्ने अली[अ°] गुज़रे मगर इसको क्या किया जाये कि ज़माने के हालात और ख़ुदा की मस्लेहत ने जिस तरह हमारे रसूल[स°] को ख़त्मे नुबूव्वत के लिये और अली को ख़िलाफ़ते बिला फ़स्ल के वास्ते ख़ास कर दिया इसी तरह मुनासिब ज़माने और हालात और क़ुदरत की निगाहे इन्तेख़ाब ने हुसैन[अ°] इब्ने अली[अ°] को कर्बला के ज़ब्हे अज़ीम के लिये चुन लिया और ख़ास कर दिया। 61[हि°] के बाद से इस वक़्त तक न यज़ीद पैदा हुआ न वैसे हालात सामने आये, न इस तरह इस्लाम मिटाने की कोशिश की गई, न क़ुदरत की मस्लेहतें ऐसी शहादत के अन्दाज में पेश आईं और न आइन्दा होंगे इसलिए न कोई हुसैन[अ°] के जैसा हो सकेगा और न कर्बला दूसरी पैदा होगी।

मिस्टर मुहम्मद अली बड़े बाख़बर बाहोश, और समझदार इन्सान, सियासत के बड़े माहिर मान लिये गये, मगर यक़ीनन मोमिनों और उनकी मिसाल बल्कि मैं तो इस हद तक बढ़ जाने की जसारत करूँगा कि शियों के अलावा शायद हज़ारों हज़ार मुसलमानों में एक दो के अलावा किसी मुसलमान ने भी तफ़सीली तौर से और गहरी नज़र से हुसैन[अ°] की शहादत पर नज़र नहीं डाली, इस वजह से वह समझ भी नहीं सकते कि इस अज़ीमुश्शान क़ुर्बानी की अहमियत, बुलन्दी और समरात व असरात और फ़ायदे क्या थे इस छोटी सोंच का नतीजा है कि वह सैकड़ों हुसैन[अ°] और हज़ारों करबलाएं बना देने पर तैयार हैं बल्कि ग़ुलाम अहमद क़ादयानी ने तो यहाँ तक कह दिया कि *"सद हुसैन अस्त दर गिरेबानम ख़ुदा"* ख़ुदा की पनाह सौ हुसैन कैसे एक छोटे से ग़ुलामे हुसैन[अ°] के गिरेबान में समा सकते हैं। कैसे दिल और दिमाग़ भी उनके इस क़ौल से इत्तेफ़ाक़ कर सकता है दुनिया इन्साफ़ करे कि समझे बूझे शहादत की तरफ़ क़दम बढ़ाना क्या इसके मिस्ल हो सकता है जो बिना इरादे शहादत पाये या बग़ैर इस जानकारी के कि मैं क़त्ल किया जाऊँगा। शहीद हो जायेगा, बचाव की राहें मौजूद होने के बाद शहादत क़ुबूल कर लेना इसके बराबर क्योंकर हो सकता जो अब किसी सूरत से बच ही न सकता हो और क़त्ल हो जाने पर मजबूर कर दिया जाए, जो सिर्फ़ एक चौ हरफ़ी लफ़्ज़ (बैअत) लेने के वास्ते हाथ बढ़ाकर क़त्ल व ग़ारत से बचना ही नहीं बल्कि अल्लाह की पनाह यज़ीद के पहलू बपहलू बैठ कर बड़े ऐश व आराम से ज़िन्दगी बसर कर सकता हो। हरगिज़ किसी ऐसे शहीद के मिस्ल नहीं क़रार दिया जा सकता जिसके लिये चारा और तदबीर की हक़ या बातिल का रास्ता कुशादा न हो सिर्फ़ क़त्ल ही क़त्ल उसके सामने हो। सैर और सैराब होकर क़त्ल होने वाला

(बक़िया पेज.............10 पर)

वालों का कहना क्यों न माना और यह कि आप यज़ीद की बैअत कर लेते तो क्या हरज था। मैं कहूँगा कि वह हुसैन[अ०] न होते जो मान लेते कोई और होता। हुसैन[अ०] तो कभी शर्मिन्दा नहीं हुए कि मुशीरों का कहना क्यों न माना हुसैन[अ०] के साथ वाला भी कोई शर्मिन्दा न हुआ। कोई बच्चा हुसैन[अ०] के साथ का शर्मिन्दा न हुआ। और उधर कोई और क्या खुद यज़ीद मलऊन शर्मिन्दा हुआ मगर याद रखिये इस फ़र्क़ को कि वह ज़िन्दगी की शरमिन्दगी ज़मीर का नतीजा न थी जिसे तौबा समझा जा सके बल्कि वह एहसासे शिकस्त का नतीजा थी अब इस ख़याल से कि मेरे बाद वाले बोलने वालों पर ज़ुल्म होगा और मुझे खुद जल्से के मफ़ाद का भी एहसास है इसलिए अपनी तक़रीर को इस दुआ पर ख़त्म करता हूँ कि ख़ुदा करे जिस तरह आज के जल्से में जिस्म एक हो रहे हैं उसी तरह हमारे दिल और दिमाग़ भी एक जो जाएं और हुसैनियत का झण्डा ख़ुदा करे बराबर लहराता रहे और पूरब से पच्छिम तक को अपने साये में ले ले।

■■■

बक़िया.............इस्लाम और कर्बला

उनसे बहुत ही पस्त है जो तीन दिन की भूख और प्यास में क़त्ल किया गया हो। अकेले मुसीबतें बर्दाश्त करने वाला उसके मुक़ाबले में कहाँ आ सकता है जिनसे पहले अपने दोस्त फिर रिश्तेदार फिर बहन भाई की औलादें फिर अपने भाई और फ़ौरन उसके बाद अपने नौजवान बेटे और आख़िर में अपने छः महीने के बच्चे को दीन व मज़हब की हिफ़ाज़त पर क़ुर्बान कर देने के बाद ऐसे ज़ुल्म व सितम और तीर, नेजा, तलवार, गुर्ज़, पत्थर और आग से ज़ख़्मी होकर शहादत की मन्ज़िल हासिल की हो।

वह जिसे अपने माल के लुट जाने और अहलो अयाल के असीर होने, क़ैद होने का कोई डर न हो हरगिज़ उसके बराबर नहीं हो सकता। जो यक़ीन रखता हो कि मेरे बाद मेरा तमाम माल व अस्बाब लुट जायेगा। मेरे अहले हरम बेपर्दा किये जायेंगे। क़ैद होंगे क़ैद होकर दर-दर फिराये जाएंगे। इन्सान अपनी ज़ात के वास्ते हर चीज़ बर्दाश्त कर लेता है और बर्दाश्त कर सकता है। लेकिन जहाँ से औलाद का सवाल आ जाए वहाँ क़दम जमाए रखना लाख दो लाख ही से शायद एक ही निकल सके। और अगर इसके साथ घर वाले उसरत व इफ़्फ़त अहले हरम की असीरी और क़ैद व बन्द का सवाल पैदा हो तो कोई ग़ैरतदार शायद बिना मजबूरी के इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।

आज तो ग़ैर नहीं ख़ुद मुसलमान ही बेपर्दगी के शैदा हैं। और उनकी बीवियाँ, बहुवें, बेटियाँ, मुँह खोले बाज़ारों में घूम रही हैं और किसी बाहया के कान पर जूँ नहीं रेंगती मगर ग़ैरतदार मुसलमान बल्कि मोमिन। बल्कि इमाम व मासूम जिसके घर वालों को खुले सरचश्मे फ़लक ने भी न देखे हों। उसके घर वालों को बेपर्दा होना वह सख़्त मुसीबत है जो बर्दाश्त के बाहर है। फिर इन तमाम चीज़ों के बाद ग़रज़ की पस्ती व बुलन्दी, ख़ुद ग़रज़ी और ख़ुलूसे नियत का फ़र्क़ भी हर शहीद को बराबर नहीं क़रार दे सकता, जो दुनिया के लिये क़त्ल हो जाये इसकी शहादत कोई शहादत नहीं और जिसमें ख़ुद ग़रज़ी, नफ़्स परस्ती की झलक है, वह इसके मिस्ल हरगिज़ नहीं हो सकता जो सिर्फ़ ख़ुदा की इताअत और दीन व मज़हब के लिये हर मुसीबत और हर सख़्ती बर्दाश्त करके शहादत की मन्ज़िल से सब्र व इस्तेक़लाल के साथ गुज़र जाए। तारीख़ की मुकम्मल तलाश और जुस्तजू के बाद आज तक एक भी ऐसा शहीद पेश न कर सकी जिसमें एक साथ एक ही वक़्त में वह तमाम शर्तें मौजूद हों जो ऊपर ज़िक्र की गईं।

और जो सब के सब बल्कि ऐसे भी बहुत ज़्यादा मुकम्मल सैय्यिदुश्शोहदा, इमामे मज़लूम व मासूम रसूले अरबी के नवासे हुसैन[अ०] इब्ने अली[अ०] भी मौजूद थे। और न आगे क़यामत तक हो सकते हैं बल्कि यूँ कहना चाहिए कि:- इस लिये यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि-

इस्लाम ज़िन्दा होता है हर कर्बला के बाद -

इब्तिदा-ए-ख़िलक़ते आलम से ता रोज़े क़याम
कर्बला बस एक थी और एक ही रह जायेगी
जब कोई मुरसल न होगा न अली[अ०] न फ़ातिमा[स०]
मिस्ले शाहे कर्बला[अ०] दुनिया कहाँ से लायेगी

■■■